किमिया किताब का अँग्रेज़ी से हिन्दी में अनुवाद दीपाली शुक्ला ने किया है। आइए, जानते हैं उनके अनुभव किताब के बारे में...

ज़िन्दगी और जीवटता की बुनावट : *किमिया*

दीपाली शुक्ला

जब पहली बार यह किताब हाथ में आई तो इसका शीर्षक यह इशारा कर रहा था कि कहानी एक लड़की के बारे में है, और आवरण पर बना चित्र भी इस बात को पुख़्ता कर रहा था। पहली बार इसको जब पढ़ा तो लगा कि कहानी बेहद परतदार है और इसके चित्र तमाम रंगों को समेटते हुए भी बेहद सादगीभरे हैं। कहानी में जो घट रहा है, क्या वो केवल किमिया का ख़याल है या इसके इतर मौत की हक़ीक़त है?

इसके बाद इस कहानी का हिन्दी अनुवाद करने की प्रक्रिया में इसको मैंने कई बार पढ़ा, चित्रों को देखा-पढ़ा। एक मज़ेदार हिस्से पर मैं पढ़ते समय बार-बार रुक जाती– यह हिस्सा था जब मौत और किमिया आपस में संवाद कर रही हैं। एक वयस्क और एक बच्ची के बीच का संवाद। मौत को अपना काम करना है, और वह है किमिया को ले जाना। और किमिया है कि बेहद संजीदगी और परिपक्वता के साथ अपने तर्क रखते हुए अपनी भावनाओं को भी साझा कर रही है। इस हिस्से से आगे कहानी ऐसे मोड़ पर ख़त्म होती है जहाँ से पाठक किमिया की ज़िन्दगी में काफ़ी गहरे तक दाख़िल हो जाता है।

एक लड़की और मौत की सीधी बातचीत– मौत की अपने काम के प्रति निष्ठा और किमिया का अपनी हसरतों और सपनों को हक़ीक़त में ढालने का हौसला। जब-जब कहानी को पढ़ा, यह सामने आता गया। इन सबके साथ यह सवाल भी मन में उभर रहे थे कि जिन पाठकों के लिए यह किताब प्रकाशित होने वाली है, वो इसको कैसे देखेंगे-समझेंगे। मौत को लेकर जिस तरह से हमारी मान्यताएँ, डर हैं, उनको यह किताब किस तरह से सम्बोधित करेगी। इस तरह का बाल साहित्य कम ही रचा जा रहा है और फिर यह भी कि वयस्कों, ख़ासकर जो अभिभावक हैं, शिक्षक हैं या बच्चों के साथ काम करते हैं, के भीतर मृत्यु को लेकर जिस तरह की धारणाएँ हैं, वो उन पूर्वाग्रहों के साथ इस किताब को कैसे देखेंगे और बच्चों के साथ इस किताब पर कैसे संवाद करेंगे?

सम्पादकीय टीम के दूसरे साथियों की भी कुछ ऐसी प्रतिक्रियाएँ थीं। जब विचारों की उथल-पुथल बढ़ गई, तब शाबाविज़ पब्लिकेशन्स की फ़ारिदेह

ख़ल्अतबरी से मैंने इस किताब को विकसित करने के पीछे की सोच को जानना चाहा। उस समय फ़ारिदेह ने जो साझा किया था, वो कुछ इस तरह से था : हदिस लज़र ग़ोलामी की यह कहानी उम्मीदों से भरी कहानी है और इस बात को सामने रखती है कि कई बार बहुत ही कठोर दिखने वाले लोग भी आपकी मदद कर सकते हैं।

किमिया एक ऐसी बच्ची है जो बाक़ी बच्चों की तरह ही दौड़ना-भागना चाहती है और अपनी शारीरिक दिक़्क़त को लेकर मायूसी से नहीं भरी है। वहीं दूसरी ओर, मदाम मौत अपने काम को करने आई हैं और उनकी भूमिका को देखें तो उनको जो काम दिया गया है, उसे करने में जुटी हैं, पर वो किमिया के प्रति कठोर नहीं हैं। और उससे बात करते समय वो अपने तर्क भी रख रही हैं। मदाम मौत ने किमिया के प्रति जो नरमी दिखाई, उसके एवज में उन्हें भी दण्डित नहीं किया जा रहा। इस कहानी में मदाम मौत का चित्र जिस तरह से खींचा गया है, वो आमतौर पर कहानियों में मिलने वाली मृत्यु की छवियों से एकदम फ़र्क़ है। हमेशा ये माना जाता रहा है कि मौत कोई भयावह चीज़ है, जबकि यह तो ज़िन्दगी का एक हिस्सा है, तो इससे घबराना क्यों? बच्चों के साथ, और बच्चे ही क्यों, हम बड़ों को आपस में भी इस वास्तविकता पर बात करने की ज़रूरत है। जहाँ जीवन कठिन है, वहाँ भी मौत को लेकर बच्चे क्या सोचते हैं? किमिया का किरदार जीवटता और हौसले से भरा है। जो उसके साथ घटा है और घट रहा है, वह उस मुश्किल में भी डर नहीं रही है। बस, अपनी एक ख़्वाहिश को पूरा करने के लिए एक वयस्क से तर्क कर रही है, और उसमें कामयाब भी हो रही है।

मानवीय संवेदनाओं की गहरी बुनावट इस किताब में है और इसलिए कई बार इसको पढ़ते हुए मेरी आँखों के आगे संघर्ष वाले इलाक़ों के बच्चों के दृश्य भी जीवन्त हो उठे। उनको जानने के बाद फिर किमिया के बारे में एक नए सिरे से सोचा और कहानी में कुछ नए रास्ते भी दिखे। पाठक से आगे बढ़ते हुए अनुवादक के बतौर जब इसपर काम किया तो बार-बार यह ध्यान रखा कि कहानी का मर्म बना रहे और शब्दों का कमाल भी।

एक और बढ़िया बात जो लगती है कि इस किताब के चित्र किमिया के अलग-अलग मूड को दर्शाते हैं। उसकी पीड़ा, ख़ुशी, सब चित्रों में झलकती है। अलग-अलग रंगों के शेड्स हैं और जीवन का हरा रंग काफ़ी प्रभावी है। इसमें किमिया की चादर में पैचवर्क के रूप में ईरान के कालीनों की भी झलक मिल जाती है।

दीपाली शुक्ला एकलव्य फ़ाउण्डेशन के प्रकाशन कार्यक्रम से जुड़ी हैं। उनका रीडिंग और लाइब्रेरी के कामों से भी जुड़ाव है। उन्हें बाल साहित्य पढ़ना व इसके बारे लिखना पसन्द है।

सम्पर्क : deepalishukla99@yahoo.com